कैंसर क्या स्वयं एक जंतु है?

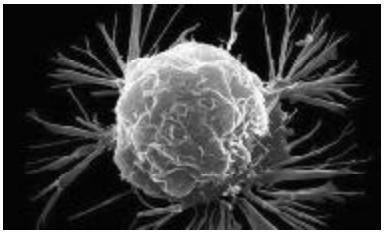

कैंसर आज भी एक चुनौती है। मगर एक नए सिद्धांत को मानें तो लगता है कि दिन बदलने को हैं। इस सिद्धांत के अनुसार आधुनिक उपचारों से बचने की कैंसर की क्षमता बहुत सीमित होती है क्योंकि कैंसर हमारे सबसे प्राचीन जंतु पूर्वज हैं। एक मायने में ये जीवित 'जीवाश्म' हैं जो 60 करोड़ सालों से ज़्यादा समय से अस्तित्व में हैं।

देखा गया है कि कतिपय कैंसर किसी भी उपचार के विरुद्ध कुछ ही वर्षों में प्रतिरोध क्षमता हासिल कर लेते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह प्रतिरोध क्षमता कैंसर कोशिकाओं के बीच जीवित रहने के संघर्ष के ज़रिए पैदा होती है। मगर कैनबरा स्थिति ऑस्ट्रेलियन नेशनल विश्वविद्यालय के अंतरिक्ष जीव वैज्ञानिक चार्ल्स लाइनवीवर और एरिज़ोना स्टेट विश्वविद्यालय के पौल डेवीस का मत है कि कैंसर कोशिकाओं का बुनियादी परस्पर सहयोग इस बात का प्रमाण है कि ये स्वतंत्र कोशिकाएं नहीं हैं।

यह सिद्धांत कहता है कि जैव विकास के शुरुआती दौर में सिर्फ एक-कोशिकीय जीव थे। ये तो खूब कोशिका विभाजन कर-करके संख्या वृद्धि करते थे। मगर करीब 60 करोड़ वर्ष पूर्व जब बहु-कोशिकीय जीवों का विकास हुआ तो उनमें कोशिका विभाजन पर कुछ रोक लगाना ज़रूरी था। अर्थात बहु-कोशिकीय जीवों में अपने एक-कोशिकीय जीवों के वे जीन मौजूद हैं जो असीमित कोशिका विभाजन में मददगार हैं। आम तौर पर ये दबे रहते हैं। मगर जब अंकुश रखने वाले जीन किसी वजह से निष्क्रिय हो जाते हैं तो विभाजन अनियंत्रित होकर कैंसर का रूप ले लेता है।

लाइनवीवर और डेवीस इससे आगे जाकर कहते हैं कि दरअसल बहु-कोशिकीय जीवों के विकास के दौर में ये कैंसर भी जीव ही थे जो बाद में आगे नहीं बढ़ पाए। अपने सिद्धांत के पक्ष में एक प्रमाण वे यह देते हैं कि कैंसर गठानों में रक्त वाहिनियां निर्मित करने की क्षमता होती है ताकि पूरी गठान को खून के साथ ऑक्सीजन व पोषण की पूर्ति होती रहे। यह सहयोग का एक उदाहरण है। इसी प्रकार से कैंसर की कुछ कोशिकाएं अन्य ऊतकों में जाकर बसने की क्षमता हासिल कर लेती हैं। अर्थात कैंसर की हर कोशिका एक स्वतंत्र कोशिका नहीं है। ये तो पूरे के पूरे जंतु हैं। इन जंतुओं का पूरा साज़ो सामान हममें से हरेक के अंदर पड़ा रहता है और मौका मिलने पर सिर उठाता है। यानी इनमें किसी भी इलाज का प्रतिरोध विकसित करने की वैसी असीमित क्षमता नहीं है जैसी बैक्टीरिया में होती है।

यदि यह सही है तो कैंसर से लड़ाई थोड़ी आसान हो जाती है। मगर अभी तो वैज्ञानिकों के बीच इस बात को लेकर काफी विवाद हैं। कई लोग इसे एक संभावना के रूप में देख रहे हैं तो कई लोगों को इस तरह के सिद्धांत कल्पना की उड़ान ही लगते हैं। वैसे स्वयं लाइनवीवर का मत है कि कोशिकाओं के बीच रक्त वाहिनियों का निर्माण बहु-कोशिकीय जीवों के विकास का एक महत्त्वपूर्ण कदम रहा होगा। वे मान रहे हैं कि जल्दी ही इस विवाद का पटाक्षेप जिनेटिक विश्लेषण से हो जाएगा। ***(स्रोत फीचर्स)***